ResearchGate

See discussions, stats, and author profiles for this publication at: https://www.researchgate.net/publication/368641684

□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□–□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□□

Book · July 2020

CITATIONS
0

1 author:

Debaki Sirola
Uttarakhand Open University
23 PUBLICATIONS **0** CITATIONS

SEE PROFILE

All content following this page was uploaded by Debaki Sirola on 19 February 2023.

The user has requested enhancement of the downloaded file.

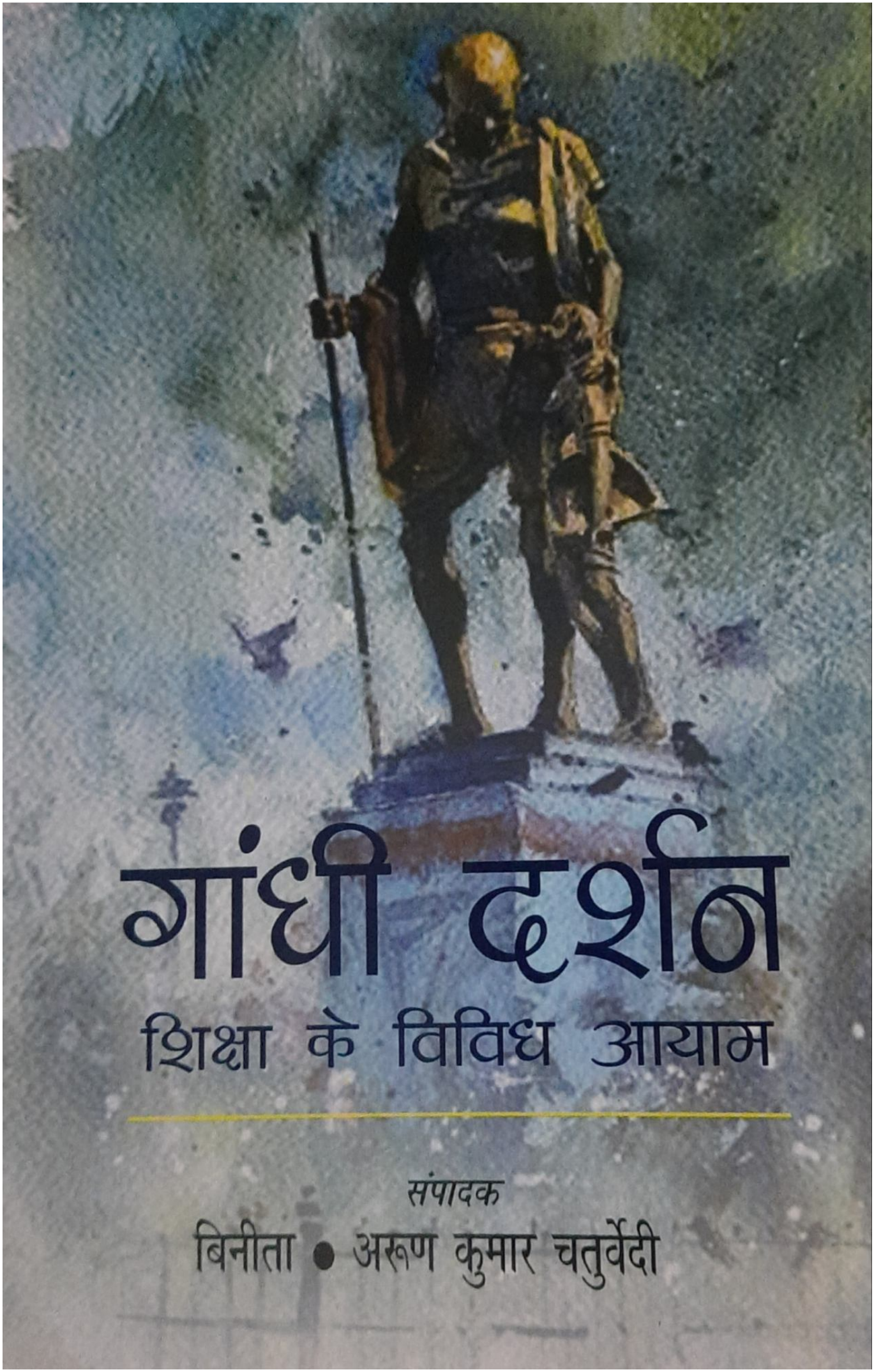

गांधी दर्शन

शिक्षा के विविध आयाम

संपादक

बिनीता • अरूण कुमार चतुर्वेदी

अनुक्रम

संपादकीय 7

आभार 11

1. महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन एवं बुनियादी शिक्षा 15
   —निशा पोरवाल
2. महात्मा गाँधी का दार्शनिक चिंतन एवं शैक्षिक विचारधाराः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इनकी प्रासंगिकता 26
   —सीमा फुलेरा
3. गाँधी जी का शिक्षा दर्शन 32
   —डरीमा शर्मा
4. महात्मा गांधी का दार्शनिक चिंतन 35
   —नन्दन सिंह कार्की, डॉ. नीता जोशी, डॉ. मनीषा बिष्ट
5. गांधी दर्शन में शिक्षा और शिक्षक 40
   — डॉ. राकेश कुमार शर्मा
6. गाँधी जी का शिक्षा दर्शन 45
   —डॉ. रूमा साह
7. महात्मा गाँधी का शैक्षिक चिन्तन 52
   —वीर प्रकाश सिंह
8. महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन 57
   —डॉ. विजेन्द्र सिंह, डॉ. रजना जैन
9. महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन 62
   —डॉ. मीना त्रिपाठी
10. महात्मा गाँधी के शिक्षा-दर्शन की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता 67
    — डॉ. देबकी सिरोला

10

महात्मा गाँधी के शिक्षा-दर्शन की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता

डॉ. देबकी सिरोला

असिस्टेंट प्रोफेसर

शिक्षा संकाय

कु. वि. वि. एस. एस. जे. परिसर, अल्मोड़ा

महात्मा गाँधी जी का स्थान विश्व के महान् शिक्षाशास्त्रियों में लिया जाता है। उनका शिक्षा दर्शन भारतीय संस्कृति, धर्म, सभ्यता, व्यावसायिकता और व्यावहारिक उपयोगिता को अपने में समेटे हुए है, क्योंकि जो विचार, चिन्तन और कर्मयोग की शिक्षा गाँधी जी ने दिया है वह भावी पीढ़ी के जीवन स्तर को उन्नत करने के लिए आवश्यक है। गाँधी जी ने देश की सम्पूर्ण परिस्थितियों का गहन चिन्तन करने के पश्चात् अपनी बुनियादी शिक्षा प्रस्तुत की थी गाँधी जी का कहना है कि भारत की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में रहती है और वहाँ के अधिकांश लोग स्वरोजगार न होने से गरीब और अशिक्षित हैं और उनके जीवन स्तर में सुधार करना आवश्यक है। इन बातों को ध्यान में रखकर गाँधी जी ने निःशुल्क अनिवार्य और स्वावलम्बी शिक्षा प्रदान करने की अपनी योजना प्रस्तुत की। उन्होंने उद्योगों के माध्यम से बच्चों को शिक्षा देने की बात कही ताकि बेरोजगारी की समस्या को दूर किया जा सके।

वर्तमान में भी देश में बेरोजगारी की समस्या चरम पर है। गावों से युवा पलायन कर रहे हैं ऐसे समय में गाँधी जी के शिक्षा-दर्शन की नितान्त आवश्यकता है। आज भारत में बढ़ती बेरोजगारी तथा बड़े एवं आधुनिक उद्योगों की भरमार ने गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता की याद दिला दी हैं। देश में जहाँ कहीं भी लघु उद्योग हस्त शिल्प कराघा उद्योग तथा कामगारों से जुड़े ऐसे अन्य तमाम उद्योग बन्द पड़े हैं वहाँ इससे जुड़े लोग बुरी तरह प्रभावित हैं तथा जहाँ कहीं भी ऐसे लघु उद्योग फल-फूल रहे हैं वहाँ का गरीब मजदूर आम आदमी तथा कामगार वर्ग अपनी दो वक्त की रोटी का प्रबन्ध कर पाने में सक्षम है। गाँधी जी देश की वर्तमान एवं भविष्य की आधारभूत आवश्यकताओं के प्रति सजग थे। उन्होंने इन आवश्यकताओं की पूर्ति और वर्ग विहीन समाज के निर्माण के लिए क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम का निर्माण किया था। गाँधी जी ने पाठ्यक्रम में हस्तकौशल एवं स्थानीय उत्पादन उद्योग धन्धों को मुख्य स्थान दिया था। उनका मानना था कि शिक्षा का लक्ष समाज को संगठित करना तथा श्रम के प्रति उचित दृष्टिकोण पैदा करना होना चाहिए ताकि मेहनत मजदूरी करने वाले व्यक्तियों को भी सम्मान और समानता की नजर से देखा जाए। इसीलिए गाँधी जी देश के छोटे बच्चों को भी आत्मनिर्भर बनाने की शिक्षा देना चाहते थे और बच्चों से भी श्रमदान करने और कराने के पक्षधर थे ताकि बच्चे आत्मनिर्भर बन सकें और श्रमदान सीखें तथा मेहनत करने से घबराएँ या हिचकिचाएँ नहीं और आवश्यकता पढ़ने पर स्वयं खेती कर सकें। इसके अतिरिक्त पुलों, बाधों, तालाबों, सड़कों व गलियों आदि का श्रमदान के द्वारा निर्माण कर सकें परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि अब श्रमदान की परिकल्पना लगभग समाप्त हो चुकी है। बागबानी की जगह कम्प्यूटर शिक्षा ने ले ली ही है। आधुनिक शिक्षा के नाम पर मनुष्य भले ही तकनिकी के सूचनात्मक ज्ञान से कितना ही बौद्धिक विकास कर ले परन्तु शारीरिक रूप से आज का युवा निश्चित रूप से आलसी होता जा रहा है। वह अपने आस-पास की बुनियादी जरूरतों से आनजान और बेपरवाह प्रतीत होता है। इसीलिए गाँधी जी ने स्वावलम्बन शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि बच्चों को जो सिखाया जाए वह दस्तकारी उद्योग के माध्यम से सिखाया जाए ताकि बालकों का श्रम के प्रति उचित नजरिया विकसित हो सके और वह आत्मनिर्भर बन सके। गाँधी जी का मानना है कि हाथ के उद्योग द्वारा शिक्षा का सामाजिक महत्व भी है इसमें शरीर का श्रम भी निहित है। जो व्यक्ति शारीरिक श्रम स्वयं नहीं करता वह श्रम के महत्व को नहीं समझ सकता। हाथ के उद्योग द्वारा शिक्षा देने से सामाजिक समानता और समभाव आयेगा। क्योंकि

बुनियादी दस्तकारियों का लोक जीवन से गहरा सम्बन्ध होता है। कई वर्षों के उथल-पुथल के बाद भी यह दस्तकारियाँ जीवन से जुड़ी रहती हैं। बुनियादी दस्तकारियों द्वारा शिक्षा देने के पीछे गाँधी जी का एक उद्देश्य यह भी था कि बच्चा 7-8 वर्ष की शिक्षा समाप्त करके स्वावलम्बी बन सके। गाँधी जी का कहना था कि बुनियादी दस्तकारियों के माध्यम से शिक्षा प्रदान करके विद्यार्थी को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

अतः कहा जा सकता है कि वर्तमान में बुनियादी दस्तकारियों के माध्यम से ही बेरोजगारी की समस्या से निपटा जा सकता है और स्थानीय साधनों का भी अच्छा उपयोग घरेलू उद्योग धन्धों में ही हो सकता है और रोजगार के अवसर भी उपलब्ध हो सकते हैं। इस प्रकार गाँधी जी का घरेलू स्थनीय उद्योग धन्धों पर बल देना आज भी महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान समय में शिक्षा के सैद्धान्तिक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है और व्यावहारिक पक्ष की उपेक्षा की जाती है जिससे युवाओं में बेरोजगारी की दर बढ़ी है। गाँधी जी ने शिक्षा के सैद्धान्तिक पक्ष के साथ-साथ व्यावहारिक पक्ष पर भी अधिक ध्यान दिया है। गाँधी जी बालक की नैर्सगिक अच्छाई में विश्वास करते थे और चीजों को करके सीखने पर जोर देते थे। गाँधी जी मानते थे कि शिक्षा हमें आत्मनिर्भर बनाने वाली होनी चाहिए जिससे बेरोजगारी का सामना करने में व्यक्ति सक्षम हो सके। आज आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों को करके सीखने तथा स्वंय के अनुभवों से सीखने के अधिक अवसर प्रदान किये जाएँ ताकि बच्चे सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान भी ग्रहण कर सकेंगे और सीखे गये ज्ञान का सदुपयोग कर पायेंगे। शिक्षा को इस तरीके का प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए ताकि बच्चे भावी जीवन में अपनी आजीविका कमाने में सक्षम हो सकें। इस प्रकार गाँधी जी ने शिक्षा के व्यावसायिक पक्ष पर काफी जोर दिया है ताकि श्रम के प्रति आस्था उत्पन्न हो सके अतः उद्योग पर आधारित शिक्षा-दर्शन की संकल्पना आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी गाँधी जी के समय पर थी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गाँधी जी का शिक्षा-दर्शन क्रिया प्रधान शिक्षा को बढ़ावा देता है इसलिए उन्होंने 3R को 3H से रिप्लेस कर कहा कि शिक्षा ऐसी हो जिसमें हाथ, हृदय और मस्तिष्क का सामंजस्यपूर्ण विकास हो। गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का अर्थ बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुँमुखी विकास करना है। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि वर्तमान समय में युवा वर्ग में बढ़ती बेरोजगारी की समस्या का मूल कारण

उन्हें स्वावलम्बी बनाने में शिक्षा का असमर्थ होना है। इसलिए गाँधी जी ने स्थानीय उद्योग-धन्धों के माध्यम से युवाओं को स्वरोजगार से जुड़ने पर बल दिया। इस प्रकार गाँधी जी ने शिक्षा को अनिवार्य बनाने के लिए गावों को स्वावलम्बन से जोड़ा ताकि बेरोजगारी की समस्या दूर हो सके, अतः गाँधी जी की स्वावलम्बी शिक्षा वर्तमान समय में गावों से पलायन करने वाले लोगों के लिए उपादेय सिद्ध होगी। गाँव स्वावलम्बन से जुड़ेंगे और युवा रोजगार प्राप्त कर पायेंगे।

सन्दर्भ-सूची

गाँधी, मोहन दास करम चन्द (1956) बुनियादी शिक्षा, अहमदाबाद : नवजीवन प्रकाशन मन्दिर।

गाँधी, मोहन दास करम चन्द (1958) सच्ची शिक्षा, अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मन्दिर।

गाँधी, मोहन दास करम चन्द (1959) शिक्षा में अहिंसक क्रान्ति, अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मन्दिर।

गाँधी, मोहन दास करम चन्द (1961) विद्यार्थियों से, वाराणसी : गाँधी ग्रन्थागार।

गाँधी, मोहन दास करम चन्द (1968) शिक्षा और सस्कृति, वाराणसीः उत्तर-प्रदेश गाँजी स्मारक निधि।

गाँधी, मोहन दास करम चन्द (2007) शिक्षा एसी हो, नई दिल्लीः सस्ता सहित्य मण्डल।

View publication stats